Issue : XV, Vol . XI
URA UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS
IMPACT FACTOR 3.18
ISSN 2229-4406
Sept. 2017 To Feb. 2018

7

महात्मा फूले की जलनीति

तानाजी रामभाऊ बोराडे
संशोधक विद्यार्थी,
जे.जे.टी.विद्यापीठ,
झुंझुनू, (राजस्थान) भारत

Research Paper - Sociology

प्रास्ताविक

म.ज्योतिबा फूले यह भारतीय किसान एवं अर्थशास्त्री थे, उनके समकालीन दादाभाई नौरोजी, महादेव रानडे, जैसे उच्चशिक्षित अर्थशास्त्री थे । म.फूले ने अपना मौलिक ग्रंथ 'शेतकऱ्यांचा आसुड' इस ग्रंथ में किसानों की बदहाली का चित्रण किया है। म:फूले के अनुसार किसानों के चार दूश्मन है एक भट, ब्राम्हण जो धर्म के नाम पर किसानों का शोषण करते है, दो साहुकार मारवाडी, गुजर किसानों को ब्याज लगाकर पैसे उकसाते है। तीन अंग्रेज सरकार के काले गोरे कामगार तथा गूलाम चार दलाल किसानों का कच्चा माल खरीदकर बाजारों में बेचते है। इसी तरह किसानों का शोषण होता है, और यह चक्र सदीयोसे चल रहा है इस चक्र में भारतीय किसान फॅसा है। किसानों की खेती निसर्ग पर आधारित थी। जो यहॉ निरंतर अकाल पडता था।

म.फूले ने खेती सुधार के लिए कुछ सुझाव दिए थे, जैसे नहर बाँध का निर्माण, तालाब का निर्माण, किसानो के बच्चो के लिए कृषी विद्यालय, कृषी महाविद्यालय, की स्थापना करना, अत्याधुनिक खेती देखने के लिए लोगों को विदेश भेजना, गाय बैलो का संवर्धन करना आदि सुझाव दिए थे। साथ ही म.फूले ने जल को सम्पती माना है जिसके पास जल है वह अधिक समृध्द है। ऐसा वे मानते थे। बरसात मे बारिश अत्यधिक होती है किंतु उस बारिश का तथा जल का सुनियोजन नहीं होता। तथा वह बह जाता है इस जल का नियोजन करने का विचार म. फूले व्यक्त करते है। अगर इस जल का सुनियोजन होता है तो यही जल किसानो के जीवन में नवसंजीवनी

S.P.Mahavidyalaya, Bhoom
Bhoom
Tq.Bhoom Dist.Osmanabad
PRINCIPAL
S.P.Mahavidyalaya,Bhoom
Dist.Osmanabad

लायेगा। साथ ही म.फूले तालाब एवं बंधारो की बात करते है। जगह-जगह बंधारो का निर्माण हो। बरसात के बारिश का एक-एक बूँद बचाए रखने की बात करते है। नहर की संकल्पना समाज एवं शासन के सामने रखकर उसके महत्व पर प्रकाश डालते है। नहर का निर्माण कैसे किया जा सकता है इसके संदर्भ में महात्मा फूले अपना मत इस प्रकार करते है।

सरकार के फलटन मे २ लाख सेवक है। उनकी तनखाह काफी है, उनको पेंशन भी रहता है। सुख सुविधाएँ भी है। उनको हर दिन जंग पर जाने की आवश्यकता भी नही है। ऐसे जवानों के हाथो से गाँव गॉव में तालाब का निर्माण किया जाना चाहिए अमन के समय (शांती) के समय जवानों की उर्जा का सही प्रयोग किया तो जल का प्रश्न मिट जाएगा। साथ ही जवानों की प्रकृति (तबियत) भी अच्छी रहेगी। साथ ही नौकरी करते समय समाज सेवा का समाधान भी मिल जायेगा। यह विचार म.फूले के रहे है।

बडे पैमाने पर छोटे-छोटे बॉध का निर्माण करेंगे तो जमीन मे जल रहेगा। धुपकाले में यह जल समस्या हल हो जाएगी साथ ही जल के कारण चारों और हरियाली रहेगी। साथ ही बगायती क्षेत्र का विकास भी हो जाएगा। आसपास के कुँए, नदी, बॉध में पाणी की मात्रा बढेगी बरसात के जल का हर बूंद उपयोग में लाना चाहिए ऐसा मत म.फूले का था। जल महत्वपूर्ण है जो किसानों का अभावग्रस्त जीवन दूर करेगा। जल के अभाव के कारण यहा के किसान का विकास नहीं हुआ।

महात्मा ज्योतिराव फूले ने बरसात के जल के संदर्भ में बहुत अच्छा विचार किया था। जहॉ-जहॉ जमीन में जल दिखेगा वह सभी जगह एवं जमीन सरकार अपने कब्जे में लेना चाहिए। साथ ही जल दिखानेवाले व्यक्ति को इनाम घोषित किए जाने चाहिए। अगर कोई किसान कुँए का निर्माण करता है तो उसे इनाम देना चाहिए ऐसी सुचना म.फूले ने की थी। म.फूले जल को महत्व देते हुए कहते है कि जिसके पास जल है उसके पास सम्पती होगी। वर्तमान समय में बाजारो में सैककों लि.पाणी बॉटल में बीका जाता है। लाखो रुपीए कृत्रीम बरसात के लिए लगाये जा रहे है।

म.फूले के मतानुसार 'जल यह धन एवं ऐश्वर्य है। जल के कारण कोई भी व्यक्ति सुविधा संपन्न बनता है। जल का महत्व समझाते हुए म.फूले अलग-अलग रास्ते बताते है। जल के संदर्भ में उन्होने निरंतर लेखन किया किसानों का जल के संदर्भ में प्रबोधन किया।'

तत्कालीन समय में अनपढ किसान को इरिगेशन के इंजीनिअर खेती के लिए समय-समय पर जल नहीं देते थे। किसी दूसरों पर जिम्मेदारी थोप देते थे। जल के लिए किसान परेशान होता था। किसान जल के संदर्भ में बातचित करता तो उसे अपमानीत करते थे।

अत: म.फूले अपने जीवन काल दलित, पिडीत, किसानो को न्याय देने का प्रयास किया है। उन्होने जलनीति के संदर्भ अंग्रेज सरकार को अलग-अलग सुझाव दिए। नहर, बॉध तालाब का

S.P.Mahavidyalaya, Bhoom
Bhoom
Tq. Bhoom Dist.O.bad

वे निरंतर पुरस्कार करते थे। जल को उन्होंने महत्वपूर्ण माना। म.फूले समाज में केवल विचार नहीं दिए बल्कि अपने विचारों को कृति में बदल दिया। पुणा के नजदीक मांजरी में उन्होंने में नहर से जल लेकर सुधारित खेती की नारींगे, फ्लॉवर, अंजीर, अनार से अपनी बाग तैयार की। नहर के जल से सुधारीत खेती हो सक्ती है। यह लोंगों को दिखाने का प्रयास किया।

संदर्भ संकेत :-

१) कांबळे उत्तम - म.फूल्यांची जलनीति, सुगावा प्रकाशन, पुणे पृ.८
२) कांबळे उत्तम - म.फूल्यांची जलनीति, सुगावा प्रकाशन, पुणे पृ.९
३) घूमटकर चंद्रकांत - म.फूले विचार दर्शन, विचार दर्शन पब्लिकेशन पृ.३३, ३४

ज्योतिचंद्र पब्लिकेशन, लातूर.

ISBN नंबर नुसार पुस्तक प्रकाशनाची सुवर्ण संधी

वैशिष्ट्ये :-

१) विद्यार्थी, संशोधक, प्राध्यापक व इतर लेखकांचे पुस्तक 'ना नफा ना तोटा' या तत्त्वावर ISBN नंबर नुसार प्रकाशित करणे.
२) संशोधक, प्राध्यापक यांच्या M.Phil, Ph.D. संशोधनात्मक पुस्तकांना विशेष प्राधान्य.
३) यु.जी.सी. च्या नवीन मार्गदर्शक तत्त्वानुसार उच्च शिक्षणामध्ये कार्यरत संशोधनार्थी व प्राध्यापक यांना आपले पुस्तक ISBN नुसारच प्रकाशित करणे आवश्यक आहे. तरी, संशोधनार्थी व प्राध्यापक यांनी आपले मौलिक साहित्य ISBN नुसार प्रकाशित करून घ्यावे, ही विनंती.

- संपर्कासाठी पत्ता -

प्रकाशक,
ज्योतीचंद्र पब्लिकेशन
"ग्यानदेव-पार्वती", R-9/139/6, विशाल शाळेजवळ,
एल.आय.सी. कॉलनी, प्रगती नगर, लातूर.
ता. जि. लातूर - 413531.(महाराष्ट्र),भारत
ऑफिस फोन नं. - 02382 - 241913
मो. नं.9423346913, 9503814000, 9637935252, 7276301000

S.P.Mahavidyalaya BHOOM Tq.Bhoom Dist.Osmanabad

PRINCIPAL
S.P.Mahavidyalaya, Bhoom
Dist.Osmanabad